Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **3**

APF–2041

M.A. (Final) Examination, 2022

SANSKRIT

(वर्ग 'इ' दर्शनशास्त्र)

Paper - VIII

(सांख्य योग मीमांसा दर्शन)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

(खण्ड–स) **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः (शब्द सीमा **50** शब्दाः)

(i) आनुश्रविकः इति शब्दस्य कः अर्थः ?

(ii) सांख्यकारिकानुसारेण विकारः कः ? कति विधश्च ?

(iii) सांख्यमते कतिविधं प्रमाणम् इष्टम् ?

(iv) किं नाम सामान्यम् ?

(v) योगसूत्रानुसारेण वैराग्यस्य परिभाषा स्पष्टयत्।

(vi) अभ्यासः कदा दृढ़भूमिः भवेत् ?

(vii) कस्य वाचकः प्रणवः ?

(viii) क्लेशाः कतिविधाः ? नामानि लिखत।

(ix) कति यमाः ? नामानि लिखत।

(x) जैमिनी सूत्रकारेण प्रतिपादितं धर्मलक्षणं किम् ?

खण्ड–ब

नोट :– अधोलिखितेषु **पञ्च** प्रश्नाः समाधेयाः (शब्द सीमा **200** शब्दाः)

2. दुःखत्रयाभिघातजिज्ञासा तदपघातके हेतौ।

दृष्टे साऽपार्था चैन्नैकान्तात्यन्ततोऽभावात्॥

कारिकेयं ससन्दर्भ व्याख्या कार्या (संस्कृतेन)।

3. सांख्यतत्त्वकौमुदीकार मतेन सत्कार्यवाद सम्बन्धे वर्णितानि विविध वादिनां मतानि सोदाहरणं विवेचनीयानि।

4. सांख्यदर्शनानुसारेण प्रकृति-विकृतयोः भेदः दर्शनीयः।

5. कथोश्चिद् द्वयोः सूत्रयोः ससन्दर्भ सटिप्पणीश्च व्याख्या विधेया–

(क) अथ योगानुशासनम्

(ख) ईश्वर प्रणिधानाद्वा

(ग) सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्

6. कति क्लेशाः ? के च ते? पातञ्जल सूत्रानुसारं पर्यालोचयत।

7. जैमिनी सूत्रकारेण धर्मलक्षणं ससूत्रं सोद्धरणं शाबरभाष्य समन्वितं प्रतिपादयत।

8. 'वेदांश्चैके सन्निकर्षं पुरुषाख्याः' जैमिनीसूत्रानुसारेण सूत्रस्य व्याख्या कार्या।

खण्ड–स

नोट :– अधोलिखितेषु चतुर्षु प्रश्नेषु कोऽपि **द्वौ** समाधेयौ (शब्द सीमा **500** शब्दाः)

9. पुरुषसिद्धिः विषये सांख्यकारिकायाः मतं सांख्यतत्त्वकौमुदी दृष्ट्या सतर्कं सटिप्पणश्च विश्लेषयत।

10. प्रकृतेर्महांस्ततोऽहंकारस्तमाद् गणश्च षोडशकः।

    तस्मादपि षोडशकात्पञ्चभ्यः पञ्च भूतानि॥

    कारिकेयं ससन्दर्भं सप्रमाणञ्च सांख्यतत्त्वकौमुदी दृष्ट्या पर्यालोचयत।

11. पातञ्जलमते कः समाधिः ? ससूत्रं सोदाहणञ्च समाधेः भेदाः विवेचयत।

12. जैमिनिसूत्रानुसारेण वेदानां अपौरुषेयत्वम् प्रतिपादयत।